(5)

चौधरीचरणसिंहमेरठविश्वविद्यालयः, मेरठम्

स्नातकोत्तर प्रथमवर्ष पाठ्यक्रम् / P.G Diploma Syllabus

ज्योतिर्विज्ञान पाठ्यक्रम

अंक विभाजन - (७० अंक आन्तरिक मूल्यांकन परीक्षा एवं ३० अंक प्रायोगिक)

प्रथम वर्ष - प्रथम सत्र

प्रथम पत्र (JSVK-१०१) – ज्योतिर्विज्ञान का परिचय एवं कर्म सिद्धान्त

ज्योतिर्विज्ञान का सामान्य परिचय, ज्योतिष की परिभाषा, ज्योतिष के त्रय एवं षड स्कन्ध का परिचय, ज्योतिर्विज्ञान के प्रवर्तक, ऐतिहासिक एवं अर्वाचीन ज्योतिषी एवं सम्बंधित ग्रन्थ, ज्योतिष का प्रयोजन, उत्तम ज्योतिषी के गुण, ज्योतिष ज्ञान का उत्तम अधिकारी। कर्म एवं ज्योतिष, कर्म विधान – नित्य, नैमित्तिक, काम्य, प्रायश्चित, निषिद्ध कर्म, दृढ कर्म, दृढादृढ कर्म, अदृढ कर्म ।

द्वितीय पत्र (JSVK-१०२) –ज्योतिष में भाव एवं राशि विचार

ज्योतिष का वैज्ञानिक स्वरुप । कुंडली के द्वादश भाव का ज्ञान, केन्द्र-त्रिकोण-त्रिषढाय-त्रिक-धन-लाभ-आयु-मारक भाव की संज्ञा, भाव एवं शारीरिक अंग । द्वादश राशियों के गुण- धर्म, अग्नि-पृथ्वी-जल-वायु संज्ञक राशियाँ, ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र राशियाँ, तकनिकी-अर्ध तकनिकी-कलात्मक राशियाँ, राशियों की आकृति, वात-पित्त-कफ राशियाँ, चर-स्थिर-द्विस्वभाव राशियाँ ।

तृतीय पत्र (JSVK-१०३) – ज्योतिष में ग्रह विचार |

ग्रहों की दिशाएं, ग्रहों की वात-पित्त-कफ प्रकृति, ग्रहों के वर्ण, ग्रहों के सत्व आदि गुण, ग्रहों के लिंग, ग्रहों के स्वाद, ग्रहों के शासकीय पद, ग्रह एवं पंचतत्व, ग्रहों की शारीरिक धातुएं, ग्रहों के शारीरिक अंग, ग्रहों की दृष्टियाँ, नवग्रह के गुण धर्म एवं कारक स्थिति, ग्रहों की उच्च-नीच- स्व- मूलत्रिकोण राशि |

चतुर्थ पत्र (JSVK-१०४) – ज्योतिर्विज्ञान में शुभ-अशुभ स्थिति का ज्ञान एवं विंशोत्तरी दशा |

कुंडली में ग्रहों के शुभ-अशुभ निर्धारण के सिद्धान्त | ग्रहों के मैत्री एवं शत्रु सम्बन्ध | नैसर्गिक शुभ एवं अशुभ ग्रह | विंशोत्तरी दशा का व्यवहारिक सिद्धान्त एवं क्रम (महादशा एवं अन्तर्दशा) | चन्द्र की ज्योतिर्विज्ञान में विशेष भूमिका |

पंचम पत्र (JSVK-१०५) – साक्षात्कार एवं आन्तरिक मूल्यांकन |

सहायक ग्रन्थ एवं पुस्तक –

१. ज्योतिष के मूल सिद्धान्त – विशिष्टाचार्य आशुतोष शर्मा, के एन राव , वाणी प्रकाशन
२. भारतीय ज्योतिष, डॉ नेमी चन्द्र शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ
३. फलदीपिका - भावार्थ बोधिनी - मन्त्रेश्वर, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन

प्रथम वर्ष - द्वितीय सत्र

प्रथम पत्र (JSVK-२०१) – पञ्चांग के महत्वपूर्ण अंग एवं काल गणना |

काल के एकादश तत्व –वर्ष- सूर्य-चन्द्र-बार्हस्पत्य वर्ष, अयन-उत्तरायण-दक्षिणायन, ऋतु-बसन्त-ग्रीष्म-वर्षा-शरद-हेमन्त-शिशिर, मास-चन्द्र एवं सौर, पक्ष-शुक्ल एवं कृष्ण, तिथि गणना, वार- होरा एवं वार विधान, नक्षत्र- सप्तविंशति नक्षत्र, करण- चर एवं स्थिर करण, योग- सप्तविंशति पञ्चांगयोग, लग्न- आधार एवं महत्त्व |

द्वितीय पत्र (JSVK-२०२) – कुण्डली में ग्रह स्थिति एवं भावत.भावम सिद्धान्त |

ग्रह का केन्द्रधिपति दोष, बाधक ग्रह, योगकारक ग्रह, विच्छेदकारी ग्रह, भावत-भावम सिद्धान्त, ग्रहों के चार प्रकार के बनाने वाले सम्बन्ध, सही गलत कुण्डली की पहचान, निर्बली एवं दिग्बली ग्रह स्थिति, ग्रहों का वक्रत्व, ग्रहों की अस्त स्थिति |

तृतीय पत्र (JSVK-२०३) – ज्योतिर्विज्ञान –कुंडली के विशेष योग |

राज योग, धन योग, गज –केसरी योग, बुध- आदित्य योग, सुनफा – अनफा- दुरुधरा- केन्द्रुम योग, वेशी-वोशी- उभयचरी योग, पञ्च महापुरुष – रुचक-भद्र-हंस-मालव्य-शश योग, सरस्वती योग, महा योग, दैन्य योग, विपरीत राजयोग, खल योग |

चतुर्थ पत्र (JSVK-२०४) – योगिनी दशा,काल पुरुष एवं फलित सिद्धान्त |

योगिनी दशा | काल पुरुष का स्वरुप एवं फलित में महत्त्व | कुंडली विश्लेषण के आधारभूत सिद्धांत एवं कुण्डली में सामान्य फलित विवेचना |

पंचम पत्र (JSVK-२०५) – साक्षात्कार एवं आन्तरिक मूल्यांकन

सहायक ग्रन्थ एवं पुस्तक –

१. ज्योतिष के मूल सिद्धान्त – आशुतोष शर्मा, के एन राव , वाणी प्रकाशन
२. भारतीय ज्योतिष, डॉ नेमी चन्द्र शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ
३. फलदीपिका - भावार्थ बोधिनी - मन्त्रेश्वर, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन